

भाषा विकास



भाषा विकास क्यों ?

1. भाषा का विकास बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण आयाम है। इससे बच्चे सुनना, समझना और बोलना सीखते हैं। इसके साथ ही बच्चों में प्रश्न पूछने की क्षमताओं का भी विकास होता है।
2. भाषा के विकास से बच्चों के व्यक्तित्व एवं मस्तिष्क का भी विकास होता है जिससे बच्चे सरलता से दूसरों की बातों को समझना और अपनी बात को समझाना सीखते हैं।
3. भाषा के विकास से बच्चे अपने हाव-भाव को पहचान कर अपने विचारों को प्रकट करना सीखते हैं।

2



भाषा विकास के लिए गतिविधियाँ

(3 से 4 साल के बच्चों के लिए)



1 इशारों के साथ गीत और कविता गवायें

2 अक्षरों का ज्ञान करवायें

3 जानवरों और पक्षियों की आवाज़ की पहचान व नकल करवायें

4 शब्दों का उच्चारण करवायें

5 लोरी सुनायें



बच्चों को सुलाते समय लोरी व गीत गा कर बच्चों की भाषा का विकास करवायें

बच्चों को चित्र के माध्यम से कहानी सुनायें और जानवरों की पहचान करवायें

बच्चों को अपने नाम के पहले अक्षर की पहचान करना सिखायें और उसका सही उच्चारण भी सिखायें

नोट- इसी तरह की और गतिविधियाँ आप अपने अनुभव से बच्चों से घर पर करवा सकते हैं।

3



भाषा विकास के लिए गतिविधियाँ

(5 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 कहानी सुना के बच्चों से प्रश्न पूछें
- 2 बच्चों से छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़वायें
- 3 बच्चों को घर पर ही शब्दों का उच्चारण करायें और लिखने के लिए प्रेरित करें
- 4 चित्रों को देख कर अधूरे शब्दों को पूरा करवायें
- 5 अपने आस-पास की चीजों की पहचान करवायें, उनके नाम का उच्चारण करवायें और उनके बारे में चर्चा करें



बच्चों को लोक गीतों द्वारा स्थानीय भाषा से अवगत करवायें एवं उस भाषा का विकास करवायें

बच्चों को वर्णमाला की पहचान एवं वर्णमाला से शुरू होने वाले नये शब्दों का उच्चारण करवायें एवं उन शब्दों को लिखने के लिए प्रेरित करें

बच्चों को घर से बाहर अपने साथ लेकर जायें और उन्हें आस-पास की चीजों की पहचान करवायें, एवं उन पर चर्चा करें

बौद्धिक विकास



आयाम



बौद्धिक विकास क्यों ?

1. इस गतिविधि के द्वारा बच्चों में बौद्धिक तार्किकता, एवं गणितज्ञ (संख्याओं को गिनने का) आदि कौशल का विकास होता है।
2. इससे बच्चों में आकार के नाप-तोल व छोटे-बड़े माप आदि चीजों की जानकारी बढ़ती है।

5



बौद्धिक विकास के लिए गतिविधियाँ

(3 से 4 साल के बच्चों के लिए)



1 घर में उपलब्ध चीज़ों से गिनती करवायें

2 नहलाते समय बच्चों को उनके शरीर के अंगों की पहचान करवायें

3 घर में उपलब्ध सब्जियों (आलू, टमाटर, प्याज़ आदि) से उनके रंगों की पहचान, उनके आकार के अनुसार वर्गीकरण और गिनती करवायें एवं उसी में से जोड़-घटाव करवायें

4 नंबर का खेल खिलायें (गत्ता/कागज़ पर लिखे गए अंकों को 1 से 10 तक क्रमानुसार जमाना)

5 बच्चों से हथेली के इस्तेमाल से घर के आंगन में छोटी-छोटी चीज़ों की लम्बाई नपवायें



बच्चों को नहलाते समय उनके शरीर के अंगों की गिनती करवायें

बच्चों को सब्जियों से गिनना और उनके आकार के बारे में बतायें

बच्चों से हथेली के इस्तेमाल से घर के आंगन में छोटी-छोटी चीज़ों की लम्बाई नपवायें

नोट- इसी तरह की और गतिविधियाँ आप अपने अनुभव से बच्चों से घर पर करवा सकते हैं।

6

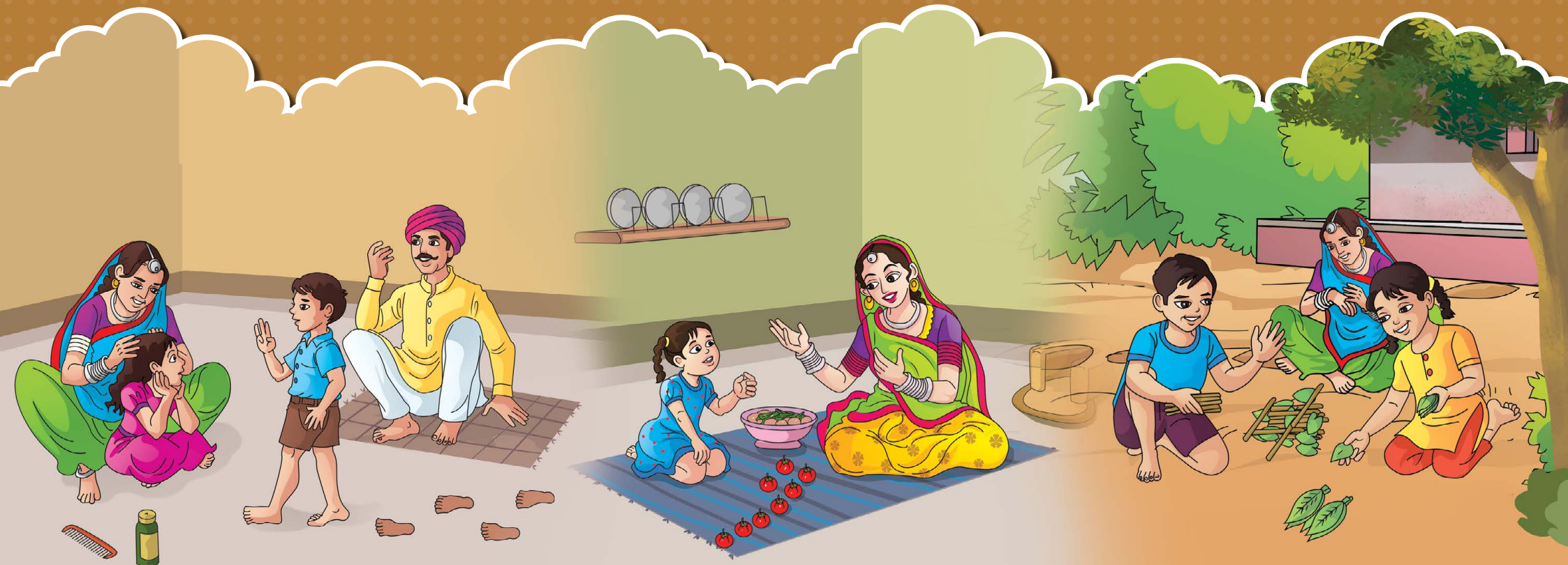


बौद्धिक विकास के लिए गतिविधियाँ

(5 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 अनाज से गिनती सिखायें
- 2 घर के आंगन में कोयले से अंक लिखकर 1 से 20 तक की गिनती की पहचान करवायें और बच्चों से बुलवायें
- 3 एक साथ रखी हुई सब्जियों, फलों, पत्तों आदि को गिनना और उन्हें अलग-अलग करवायें
- 4 एक ही आकार और रंगों की चीज़ों को अलग-अलग करवायें
- 5 बच्चों से हथेली के इस्तेमाल से घर के आंगन में छोटी-छोटी चीज़ों की लम्बाई नपवायें



बच्चों को उनके कदमों से गिनना सिखायें

बच्चों को घर में उपस्थित चीज़ों के माध्यम से जोड़ (+) और बाकी (-) करना सिखायें

बच्चों को पत्तों, लकड़ियों व पत्थरों से गिनती गिनना सिखायें एवं आकार के अनुसार उन्हें अलग-अलग करवायें

नोट- इसी तरह की और गतिविधियाँ आप अपने अनुभव से बच्चों से घर पर करवा सकते हैं।

रचनात्मक विकास



आयाम 3



रचनात्मक विकास क्यों ?

1. इस आयाम को करने से बच्चों में कल्पना और रचना शक्ति का विकास होता है।
2. रचनात्मक गतिविधियों से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है एवं कठिनाईयों से जूझने का कौशल तैयार होता है।
3. बच्चों में समाज की अलग-अलग भूमिकाओं की समझ बढ़ती है।

रचनात्मक विकास के लिए गतिविधियाँ

(3 से 4 साल के बच्चों के लिए)

1 कागज की गोलियाँ बनवायें

2 स्वतंत्र चित्रकारी करवायें

3 घर पर उपलब्ध पुरानी चीजों से खिलवायें और उनसे खिलौने बनवायें (कबाड़ से जुगाड़)

4 कपड़ों से गुड़ियाँ, बैल-गाड़ियाँ इत्यादि बनवायें



बच्चों द्वारा स्वतंत्र चित्रकारी करवायें व उसे पूरा करने के लिए प्रेरित करें

कंकर और मोटे अनाज के दानों के माध्यम से आकृतियाँ बनवायें

बच्चों को चित्रों के माध्यम से आकार और नाम बतायें



रचनात्मक विकास के लिए गतिविधियाँ

(5 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 मिट्टी या कागज के खिलौने बनवायें
- 2 पत्तों द्वारा चित्र बनवायें
- 3 ब्रश द्वारा पेंटिंग करवायें
- 4 माचिस की तिल्लियों द्वारा आकृति बनवायें
- 5 फूलों और सब्जियों के चित्र बनवायें



अभिभावक बच्चों को कहानी सुनायें एवं प्रश्न पूछें साथ ही बच्चों को भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें

बच्चों को पत्तों, लकड़ियों एवं पत्थरों की सहायता से अलग-अलग आकार देकर छोटे बड़े चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें

बच्चों को घर पर उपलब्ध सब्जियाँ, फलों, पत्तों एवं छोटी बड़ी लड़कियों को उनके आकार, रंग एवं नाप के अनुसार अलग-अलग करने के लिए प्रेरित करें

शारीरिक विकास



शारीरिक विकास क्यों ?

1. इस आयाम से बच्चों के शरीर के अंगों में पाए जाने वाली छोटी और बड़ी मांसपेशियां मजबूत, सक्रिय एवं सुडौल होती हैं।
2. बच्चों में छोटी-छोटी चीजों को पकड़ने, उठाने और उनसे खेलने की क्षमता बढ़ती है।
3. शारीरिक गतिविधियों द्वारा मस्तिष्क और शरीर का विकास होता है।

शारीरिक विकास के लिए गतिविधियाँ

(3 से 4 साल के बच्चों के लिए)

11



1

व्यायाम करवायें

2

गेंद फेंकें और
पकड़वायें

3

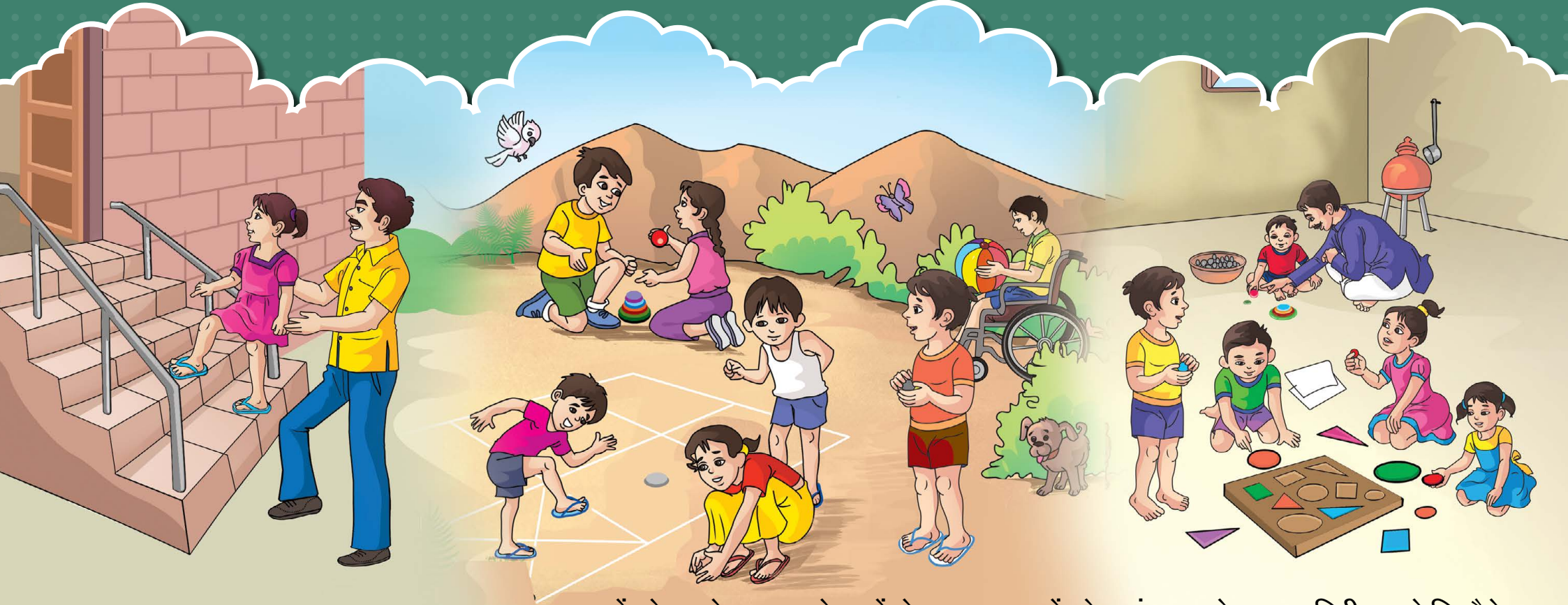
अभिनय गीत
करवायें

4

नृत्य करवायें

5

मोती
पिरोयें



संतुलन के लिए अभिभावकों की
निगरानी में सीढ़ियाँ चढ़ायें व उतरवायें

बच्चों को घर से बाहर दूसरे बच्चों के
साथ स्वतंत्र खेल खेलने दें जिससे
बड़ी माँसपेशियों को विकास हो

बच्चों को स्वतंत्र रूप से कागज़, मिट्टी, पुराने खिलौने
व घर पर पुरानी चीज़ों से खेल खेलने दें
जिससे छोटी माँसपेशियों का विकास हो

नोट- इसी तरह की और गतिविधियाँ आप अपने अनुभव से बच्चों से घर पर करवा सकते हैं।



शारीरिक विकास के लिए गतिविधियाँ

(5 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 गिनती के आधार पर ताली बजवायें
- 2 स्वतंत्र खेल खिलायें (जैसे- पकड़म पकड़ाई, नदी, पहाड़ आदि)
- 3 रस्सी की रेखा खींच कर किसी वस्तु के साथ संतुलन बनाकर उसपर चलवायें
- 4 रस्सी कूदवायें
- 5 गेंद फेंकना, पकड़ना और पैरों से मारना सिखायें



संतुलन के लिए
रस्सी पर चलवायें

बच्चों को घर के छोटे-बड़े कामों में
हाथ बटाने के लिए प्रेरित करें

बच्चों को व्यायाम करने
के लिए प्रेरित करें

सामाजिक विकास



सामाजिक विकास क्यों ?

1. बच्चों में छोटी उम्र से भावनात्मक जुड़ाव एवं अभिव्यक्ति का विकास आवश्यक है।
2. सामाजिक परिवेश व माहौल की समझ उन्हें संतुलित व सहज जीवन जीने की क्षमता देगी।
3. दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने से वे बेहतर सम्बंध बना सकेंगे।
4. सहयोग व सहभागिता के द्वारा वे समाज में अपनी पहचान बना सकेंगे।



सामाजिक विकास के लिए गतिविधियाँ

(3 से 4 साल के बच्चों के लिए)



- 1 परिवार और समाज में पालन किए जाने वाले सामाजिक मूल्यों का अनुसरण करवायें (जैसे- बड़ों का आदर एवं अभिवादन करें, छोटी से प्यार करें)
- 2 घर के छोटे-छोटे कामों में बच्चों को सम्मिलित करें (जैसे - घर के कामों में हाथ बटवायें, पौधों में पानी दिलवायें, जानवरों को खाना दिलवायें, चिड़ियों को दाना दिलवायें)
- 3 सामाजिक गतिविधियों में बच्चों को सम्मिलित करें (जैसे- शादी, मेला, त्यौहार, बाज़ार में साथ ले जाना आदि)
- 4 बच्चों को मिल बाँटकर खाने व एक साथ खेलने के लिए प्रेरित करें
- 5 बच्चों को समूह में खेलने के लिए प्रेरित करें



बच्चों को मिल बाँटकर खाने के लिए प्रेरित करें

बच्चों को परिवार के सदस्यों एवं आस पड़ोस के लोगों के नाम और संबंधों से अवगत करें एवं शिष्टाचार सिखायें

बच्चों की उपलब्धियों की प्रशंसा करवायें और उनको शाबाशी दें



सामाजिक विकास के लिए गतिविधियाँ

(5 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 बच्चों को परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदार/आस पड़ोस के संबंधों के बारे में बतायें (जैसे – दादा-दादी, काका काकी, बुआ आदि)
- 2 बच्चों को सामाजिक एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करें
- 3 बच्चों को स्वतंत्र रूप से उनकी इच्छा के अनुसार खेलने दें
- 4 बच्चों की उपलब्धियों की प्रशंसा करें और उनको शाबाशी दें



बच्चों को प्यार से समझायें



जब भी समय मिले माता-पिता बच्चों को अपने साथ रखें एवं उन्हें काम में हाथ बटाने के लिए प्रेरित करें



बच्चों को परिवार के सदस्यों के साथ समय बितवायें

सक्रिय विकास



सक्रिय देखभाल और सुरक्षा क्यों ?

1. इस आयाम की मदद से बच्चों के माता-पिता बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।
2. इस उम्र में बच्चे बेहद संवेदनशील होते हैं। असामाजिक दुर्घटनाओं का डर अधिक होता है जिसे वे स्वयं सही ढंग से व्यक्त भी नहीं कर सकते। इसलिये यह बहुत ज़रूरी है कि उन्हें किसी भरोसेमंद व्यक्ति की देखरेख में ही छोड़ा जाये।
3. यह बहुत आवश्यक है कि बढ़ती उम्र के बच्चों को अच्छे-बुरे आचारण के बारे में भी बताया जाये।
4. इस चरण में उनके साथ व्यतीत किया गया वक्त आपके द्वारा उनके प्रति स्नेह को प्रकट करने का सबसे बेहतर तरीका है।



सक्रिय विकास के लिए गतिविधियाँ

(3 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 लड़के और लड़की में किसी भी प्रकार का भेदभाव न करें
- 2 बच्चों के साथ मार पीट, गाली गलौज न करें उनके साथ मानवीय एवं सम्मानजनक व्यवहार करें
- 3 बच्चों का आत्म विश्वास बढ़ाये और अंधरे या अनजान चीजों, इत्यादि से न डरायें
- 4 घरेलू हिंसा, गुटका-तम्बाकु, शराब का सेवन, अन्य व्यसनों का आचरण न करें और बच्चों को भी न करने की शिक्षा दें। आप अपने बच्चों का आदर्श स्वयं बने
- 5 बच्चों का बचपन न छीने और उन्हें विवाह, मंगनी या बाल मजदूरी जैसे कामों के साथ न जोड़े



बच्चों को वयस्कों की देखरेख में छोड़कर जायें

बच्चों को नुकिले और नुकसान पहुंचाने वाली चीजों से दूर रखें

बच्चों को सुरक्षित एवं असुरक्षित अनुभवों के बारे में बतायें तथा उनके अनुभवों को ध्यान से सुनें



सक्रिय विकास के लिए गतिविधियाँ

(5 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 बच्चों के साथ मार पीट, गाली गलौज न करें उनके साथ मानवीय एवं सम्मानजनक व्यवहार करें
- 2 बच्चों का आत्म विश्वास बढ़ाये और अंधरे या अनजान चीजों, इत्यादि से न डरायें
- 3 घरेलू हिंसा, गुटका-तम्बाकू, शराब का सेवन, अन्य व्यसयों का आचरण न करें और बच्चों को भी न करने की शिक्षा दें। आप अपने बच्चों का आदर्श स्वयं बने
- 4 बच्चों को गाली न दें
- 5 बच्चों का बचपन न छीने और उन्हें विवाह, मंगनी या बाल मजदूरी जैसे कामों के साथ न जोड़े



बच्चों को सड़क सुरक्षा की जानकारी दें तथा उन पर नज़र रखें

लड़के व लड़की के बीच भेदभाव न करें

बच्चों को जलस्रोतों तथा आस-पास की जोखिम के बारे में बतायें

शारीरिक देखभाल



आयाम



शारीरिक देखभाल क्यों ?

1. बच्चों की अच्छी सेहत और सही देखभाल बच्चों के समुचित और सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है
2. बच्चे को संतुलित आहार लेने तथा साफ़-सफाई और स्वच्छता के अनुपालन की आदत डलवायी जाये। जो कि जानलेवा रोगों से बचाव के लिए पहला कदम है।
3. बच्चे में बीमारियों के लक्षण के प्रति हमेशा सजग रहें। उन्हें तरह-तरह की संक्रामक बीमारियों से सुरक्षित करने के लिये सूची अनुसार सभी टीके ज़रूर लगवायें। नियमित स्वास्थ्य जांच और टीकाकरण उन्हें कई खतरनाक बीमारियों से बचा सकता है।



शारीरिक देखभाल के लिए गतिविधियाँ

(3 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 बच्चों को आई.एफ.ए. की दवाई, आंगनवाड़ी से नियमित रूप से दिलाते रहें
- 2 बच्चों को अलग थाली में खाना खिलायें ताकि आप को उनके द्वारा खायी गई सही मात्रा का ध्यान रहें
- 3 बच्चों की बढ़ती उम्र के हिसाब से खाने की सही मात्रा के बारे में आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री से परामर्श करें व पालन करें
- 4 बच्चों को पालक, हरी सब्जी और तिरंगा भोजन खाने की आदत डालें
- 5 बिस्कुट, तले हुए व्यंजन, चिप्स, अधिक मिठाई इत्यादि की आदत बच्चों को न पड़ने दें



बच्चों का वजन मापन और वृद्धि निगरानी नियमित रूप से करवायें और ममता कार्ड में दर्ज करवायें

बच्चे सही मात्रा में संतुलित आहार नियमित रूप से लें, ये सुनिश्चित करें

बीमार पड़ने पर भी बच्चे को खिलाते-पिलाते रहें



शारीरिक देखभाल के लिए गतिविधियाँ

(3 से 6 साल के बच्चों के लिए)

1 बच्चों को चप्पल पहनने की आदत डालवायें

2 बच्चों को रोज़ नहलायें और बाहर से आ कर हाथ, पैर और मुँह धोना सिखायें

3 मूत्र विसर्जन के लिए भी शौचालय का उपयोग करना सिखायें

4 अपने आस-पास सफ़ाई रखने की आदत डालवायें

5 बच्चों को साफ़ पानी पीने का महत्व व तरीके समझायें



खाना खाने से पहले और शौच के बाद हाथ धोने की आदत डालवायें



अपने बच्चे को शौचालय के इस्तेमाल की आदत डालवायें



बच्चों को स्वयं अपनी साफ़-सफ़ाई रखना सिखायें



शारीरिक देखभाल के लिए गतिविधियाँ

(3 से 6 साल के बच्चों के लिए)



- 1 बच्चों को धुएं एवं दूषित हवा से बचायें
- 2 बच्चों को कीड़े मारने की दवा प्रति चार माह में दें जो कि आंगनवाड़ी में मुफ्त उपलब्ध है
- 3 मौसम के अनुरूप कपड़े पहनें और मौसमी बीमारियों से बचें
- 4 हानिकारक वस्तुएं को बच्चों से दूर रखें
- 5 निमोनिया, बुखार या दस्त रोग होने की स्थिति में पुरे उपचार के साथ, बच्चों को उपयुक्त, एवं रोज जितना ही खाना जरूर दें
- 6 दस्त होने पर, ओ.आर.एस. के घोल के साथ बच्चों को जिंक की गोली, पन्द्रह दिनों तक अवश्य दें



बच्चों की नियमित रूप से जांच करवायें और डॉक्टरी रिपोर्ट संभाल कर रखें

बीमारी के लक्षण की पहचान के प्रति सतर्क रहें तथा जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करें

बच्चों का सम्पूर्ण टीकाकरण सही समय पर करवायें